संपादकीय

प्रिय पाठको! जनवरी माह में हमने गणतंत्र दिवस को बहुत उत्साह के साथ मनाया, यह दिन भारतवासियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस दिन भारत का संविधान लागू हुआ था, यह हमें अपने अधिकारों के साथ, कर्तव्यों को याद दिलाता है, हमें अपने देश को आगे बढ़ाने व उसकी उन्नति करने हेतु कार्य करना चाहिए। हमें अपनी संस्कृति से प्रेम करते हुए संवैधानिक मूल्यों को बनाए रखने का प्रयास करते रहना चाहिए। यह तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति तक शिक्षा की पहुँच हो, तभी लोग मिलकर समृद्ध एवं समावेशी भारत के निर्माण में योगदान कर बेहतर नागरिक बन सकते हैं।

शिक्षा के लिए पुस्तकें महत्वपूर्ण होती हैं, जो ज्ञान का भंडार होती हैं। पाठ्यपुस्तकें हमें वह ज्ञान प्रदान करती हैं, जो विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों के लिए प्राथमिक संसाधन के रूप में कार्य करता है। अत: विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.एस.ई.) 2023 पाठ्यपुस्तकों के निर्माण हेतु मुख्य सिद्धांतों की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। इसी पर आधारित "*मल्हार* कक्षा 6 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक का विश्लेषणात्मक अध्ययन" नामक लेख पत्रिका में सम्मिलित किया गया है। इस लेख में एन.सी.एफ.एस.ई. 2023 के मुख्य सिद्धांतों के आलोक में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित कक्षा 6 की *मल्हार* पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

बचपन से ही भाषा एवं गणित का अच्छा ज्ञान होना बच्चों के शैक्षिक विकास के लिए अति आवश्यक है। शिक्षा की यह बुनियाद जितनी अधिक सुदृढ़ होगी, जीवन में सीखने की योग्यता उतनी ही सशक्त होगी। इसी पर आधारित "प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बुनियादी भाषा ज्ञान एवं संख्या ज्ञान पर 'निपुण भारत' मिशन के प्रभाव का अध्ययन" शोध-पत्र पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित किया गया है। इस शोध-पत्र में विद्यार्थियों की बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का गुणात्मक विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

सोशल मीडिया ने आज सभी को बहुत व्यस्त कर दिया है, विशेषकर युवा पीढ़ी को। सोशल मीडिया के कारण लोगों का आपस में संवाद कम हो रहा है। युवा पीढ़ी की रचनात्मकता प्रभावित हो रही है। उनके लेखन कौशल की हानि हो रही है। इसी पर आधारित "'पाती अपनों को मुहिम'—एक नवाचारी प्रयास" लेख पत्रिका में सम्मिलित किया गया है। इस लेख में विद्यार्थियों के सीखने की प्रवृत्ति, सृजनशीलता और लेखन कौशल को बढ़ाने के प्रयासों आदि पर चर्चा की गई है।

वर्तमान में शिक्षा के लिए केवल पारंपरिक शिक्षण विधियाँ उपयुक्त नहीं रह गईं हैं, बल्कि नई तकनीक आवश्यक हो गई है। तकनीक का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में लाभकारी हो सकता है। इसी पर आधारित पत्रिका में सम्मिलित "नैनो-लर्निंग पर विद्यार्थी-शिक्षकों की अवधारणा—एक विश्लेषण" शोध-पत्र में स्पष्ट किया गया है कि "नैनो-लर्निंग" छोटे, संक्षिप्त तथा लक्षित शिक्षण मॉड्यूल के माध्यम से ज्ञान प्रदान करता है। साथ ही, इसके सकारात्मक व नकारात्मक पक्षों को भी प्रस्तुत किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आने से शिक्षा के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, शिक्षा को बच्चों के लिए किस प्रकार आनंददायक बनाया जाए, इसी

को आधार बनाकर खेलों के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना एक अभिनव दृष्टिकोण है। इसी पर आधारित "शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में गेमिफिकेशन का समावेशन" लेख पत्रिका में सम्मिलित किया गया है। इस लेख में गेमिफिकेशन बच्चों की भागीदारी, उसकी रचनात्मक सोच तथा सामाजिक कौशल को बढ़ावा देने के विषय में चर्चा की गई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दिव्यांग बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित करते हुए, उन्हें मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने के महत्व पर बल देती है। इसका उद्देश्य व्यक्तिगत शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण एवं प्रौद्योगिकी के अभिनव उपयोग के माध्यम से प्रणालीगत बाधाओं को दूर करना और विद्यार्थी अनुकूल वातावरण स्थापित करना है। इसी पर आधारित "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में समावेशी शिक्षा हेतु किए गए प्रगतिशील सुधार" नामक लेख पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित किया गया है। लेख में विद्यालयी शिक्षा में न्यायसंगत एवं समावेशी शिक्षा प्रदान करना और हर बच्चे को सीखने व बढ़ने के समान अवसर देने जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई है।

प्राचीन समय से ही समाज के सांस्कृतिक प्रदर्शन में विभिन्न कलाओं का उपयोग किया जा रहा है। इतिहास में झाँके तो तत्कालीन कलाएँ कोई न कोई शिक्षा देती हैं, जैसे— गुफाओं और पत्थरों पर चित्र लिपि का उपयोग, जो हमें तत्कालीन समाज के विषय में सूचनाएँ देने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसी पर आधारित "कला समेकित शिक्षा— प्रभाव, अनुभव एवं चुनौतियाँ" नामक शोध पत्र इस पत्रिका के अंक में सम्मिलित किया गया है। इस शोध-पत्र में शिक्षा में कला के उपयोग को प्रस्तुत किया गया है। यह शोध-पत्र कला समेकित शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को न केवल आकर्षक बल्कि प्रासंगिक भी बताता है।

शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति किसी विशिष्ट क्षेत्र में ज्ञान एवं कौशल-प्रशिक्षण के माध्यम से जीविकोपार्जन करता है। इसी पर आधारित "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यावसायिक शिक्षा की पुनर्कल्पना— एक विश्लेषण" नामक लेख पत्रिका में दिया गया है। यह लेख समसामयिक संदर्भ में व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता एवं चुनौतियों को प्रस्तुत करता है। इसमें बताया गया है कि व्यावसायिक शिक्षा को विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर तक मुख्यधारा की शिक्षा से एकीकृत किए जाने की आवश्यकता है।

विद्यालय एक ऐसा स्थल है, जहाँ विद्या के साथ बच्चों को जीवनयापन हेतु विभिन्न कौशल सिखाए जाते हैं, इसमें सुरक्षा एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। विद्यालयों में स्वयं एवं अपने आसपास के वातावरण को किस प्रकार सुरक्षित रखा जा सके, सिखाया जाता है। इसी पर आधारित पत्रिका में सम्मिलित लेख "आपदा प्रबंधन— सुरक्षित विद्यार्थी, सुरक्षित विद्यालय" में विद्यार्थी एवं विद्यालय आपदा प्रबंधन में किस तरह से अपनी भूमिका निर्वहन कर सकते हैं? को व्यावहारिक दृष्टि से जानने व समझाने का प्रयास किया गया है।

सुरक्षित विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता को बढ़ाता है, पत्रिका में सम्मिलित अन्य लेख "आनंददायक विद्यालयी-शिक्षा हेतु समुचित सुरक्षा प्रबंधन" पर आधारित है। इसमें सुरक्षित विद्यालयी वातावरण के प्रति विद्यालयी प्रबंधन तथा शिक्षकों के साथ विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को भी सुरक्षा के प्रति जागरूक करने की दिशा में सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

सूचना एवं प्रौद्योगिकी का उपयोग लगातार बढ़ रहा है, जिसका प्रभाव हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर पड़ने लगा है। विशेषकर यह शिक्षा को अधिक प्रभावित कर रहा है। इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्षों को "डिजिटल दुनिया में बदलती अधिगम पारिस्थितिकी" नामक पुस्तक समीक्षा में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने अनुभव आधारित मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, आलोचनात्मक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचारी प्रयोग, क्षेत्र (फील्ड) अनुभव आदि प्रकाशन हेतु आवरण 3 पर दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादक समिति